भारत सरकार

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या : 142

दिनांक 20 जुलाई, 2026

पीएमयूवाई के अंतर्गत शामिल किए गए लाभार्थियों की संख्या

142 # श्री बृज लालः

श्री कणाद पुरकायस्थः

क्या **पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) मई 2026 की स्थिति के अनुसार प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (पीएमयूवाई) के अंतर्गत शामिल किए गए कुल लाभार्थियों की संख्या कितनी है;

(ख) वर्ष 2026 में अब तक एलपीजी कनेक्शन वितरण के क्षेत्र में क्या प्रगति हुई है;

(ग) क्या पीएमयूवाई के अंतर्गत एलपीजी कवरेज में सुधार का घरेलू वायु प्रदूषण से संबंधित श्वसन रोगों और स्वास्थ्य संबंधी श्वसन रोगों में कमी आई है; और

(घ) मुफ्त निरीक्षण और एलपीजी होज़ रिप्लेसमेंट सहित कौन-कौन सी सुरक्षा पहलें शुरू की गई हैं?

उत्तर

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय में राज्य मंत्री

(श्री सुरेश गोपी)

(क) और (ख): गरीब परिवारों की वयस्क महिलाओं को बगैर जमानत राशि के एलपीजी कनेक्शन प्रदान करने के उद्देश्य से मई, 2016 में प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (पीएमयूवाई) शुरू की गई थी। सरकार ने वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान पीएमयूवाई के तहत 25 लाख अतिरिक्त एलपीजी कनेक्शन जारी करने की मंजूरी दी थी।

दिनांक 01.07.2026 की स्थिति के अनुसार, तेल विपणन कंपनियों (ओएमसीज) ने नवीनतम विस्तार के तहत 25 लाख एलपीजी कनेक्शन जारी किए हैं, जिससे पीएमयूवाई योजना के तहत कनेक्शनों की कुल संख्या 10.58 करोड़ हो गई है।

(ग): पीएमयूवाई का ग्रामीण परिवारों के जीवन पर विशेष रूप से महिलाओं तथा ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में परिवारों पर महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव पड़ा है, जिसमें लकड़ी, गोबर और फसल अवशेष जैसे ठोस ईंधन जलाने से जुड़े पारंपरिक खाना पकाने के तरीकों में बदलाव भी शामिल हैं। स्वच्छ ईंधन के उपयोग से घर के अंदर वायु प्रदूषण कम होता है, जिससे विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों में जो पारंपरिक रूप से घरेलू धुएं के संपर्क में अधिक आते हैं, के श्वसन स्वास्थ्य में सुधार होता है।

पीएमयूवाई की हालिया मूल्यांकन रिपोर्ट के अनुसार, पारंपरिक ईंधन से निकलने वाले धुएं के संपर्क को कम करने से लाभार्थियों के स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है, विशेष रूप से धुएं से संबंधित बीमारियों में कमी आई है। इसके अलावा, रिपोर्ट के अनुसार, सर्वेक्षण में शामिल 74.27% लाभार्थियों ने एलपीजी अपनाने के बाद घर के अंदर वायु प्रदूषण में कमी की सूचना दी है। जो लाभार्थी पहले खाना

पकाने के लिए ठोस ईंधन पर निर्भर थे, उन्हें आमतौर पर सांस की तकलीफ, आंखों में जलन और अन्य पुरानी स्वास्थ्य समस्याओं का अनुभव होता था। एलपीजी अपनाने के बाद, लगभग 80.78% लाभार्थियों ने खांसी और सांस फूलने में कमी महसूस की है। साथ ही, बड़ी संख्या में लाभार्थियों ने आंखों में जलन, धुएं के अंदर जाने और सिरदर्द और चक्कर आने में भी हुई कमी की सूचना दी है।

द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट (टेरी) द्वारा किए गए एक अन्य अध्ययन से सामने आया है कि वर्ष 2019 में प्रमुख भारतीय राज्यों में अनुमानित वार्षिक औसत परिवेशी वायु गुणवत्ता (पीएम 2.5) का स्तर, सामान्य परिदृश्य (पीएमयूवाई के बिना) के तहत 5-16 माइक्रोग्राम/मीटर घन की सीमा में था, जबकि पीएमयूवाई कार्यान्वयन सहित, स्तर 4-8 माइक्रोग्राम/मीटर घन की सीमा में होने का अनुमान लगाया गया था, जो दर्शाता है कि पीएमयूवाई का प्रभाव घरेलू और परिवेशी वायु प्रदूषण दोनों के लिए ही सकारात्मक है।

इसके अलावा, छह राज्यों में आईआईटी कानपुर द्वारा किए गए पीएमयूवाई के मूल्यांकन में पाया गया कि एलपीजी सिलेंडरों का उपयोग करने वाले घरों में खाना पकाने के समय के दौरान घर के अंदर की वायु की गुणवत्ता, कम एलपीजी तथा पारंपरिक चूल्हे का उपयोग करने वाले घरों की वायु की गुणवत्ता की तुलना में लगभग दोगुनी अच्छी थी। इस मूल्यांकन के हिस्से के रूप में किए गए पीएमयूवाई सर्वेक्षण का विश्लेषण विशेष रूप से प्राथमिक खाना पकाने वाले व्यक्तियों के लिए स्पष्ट रूप से पीएमयूवाई के तहत एलपीजी के उपयोग के स्वास्थ्य लाभों को दर्शाता है।

(घ): एलपीजी उपभोक्ताओं के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए, "खुशियां अब तीन गुना" विषय के तहत वर्ष 2024-2025 के दौरान पूरे देश में एक बुनियादी सुरक्षा अभियान आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य घरेलू एलपीजी ग्राहकों के घर तक पहुंचना था। इस अभियान को एलपीजी के सुरक्षित उपयोग के बारे में उपभोक्ताओं को शिक्षित करने के लिए डिज़ाइन किया गया था, जिसमें प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से व्यापक जन जागरूकता पहल सहित ग्राहक परिसर में ऑन-साइट सुरक्षा जांच और सुरक्षा होज का प्रतिस्थापन शामिल था। इस अभियान ने महत्वपूर्ण प्रगति हासिल की, जिसमें उपभोक्ता को बिना किसी लागत के ग्राहक के परिसर में ही 12.12 करोड़ से भी अधिक मुफ्त बुनियादी सुरक्षा की जांच की गई और 4.65 करोड़ से अधिक एलपीजी होज को रियायती दरों पर बदला गया। इसके अलावा, एलपीजी पंचायतों और स्कूलों में एलपीजी सुरक्षा क्लीनिकों जैसी सुरक्षा पहलों के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्र में आम जनता तक पहुंच बनाने के लिए ऑडियो-विजुअल (एवी) सामग्री का उपयोग किया गया। इन एवीज को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर भी साझा किया गया ताकि पहुंच और प्रभाव को बढ़ाया जा सके। पीएमयूवाई लाभार्थियों और कम आय वर्ग के ग्राहकों को शामिल करने पर विशेष जोर दिया गया, ताकि एलपीजी के सुरक्षित उपयोग और कनेक्शन की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके।

*****